ले० फेरावंगलवारंभ्रम्भ सासधेतमा गाऽन्
ग्रंथिछंनपालंम्भ्र

ॐ सिंऽरसिंदुरतैरा तिलेरे लौवनतै मानिमानी मेरे
लौवन पिहमानेफलै कपरा टैवपारसारलेगि
पहिरा फेरे [illegible]
[illegible]

जिनवाचा सासनदेवजिनवा ।।। सिंदुरतिलकादि

ॐ श्री सैरे पुरु गडु सौडेलाविसालां टिलाका टिवलाग्रसा
सासनदेवजिनवाणी जुका कोमंत्र ।।

ॐ नमः सिद्धं

१५	१३	१	४
८	३	१८	१०
१२	१५	८	१
६	५	८	११

ग्रसासनदेवंथभोजपत्र
लेखनाग्रन्थचारि
सहनकाठनलेखिता

८	१५	२	९
३	३	११	१४
१२	१६	८	१
५	५	१०	१२

ग्रसासनदेवंथभोजपत्रलि
खितेग्रन्थजिनलाग
न्यतु ।।

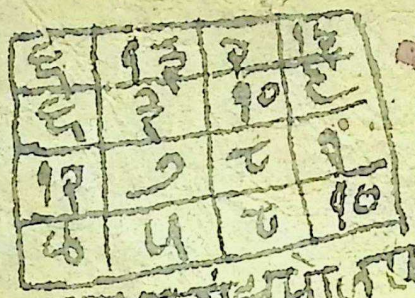

गोलोद्भवमो
घयत्रलिखिवा
वा स्त्रीवाम
गर्भवती रक्षा
शिरोलेपस्त्र

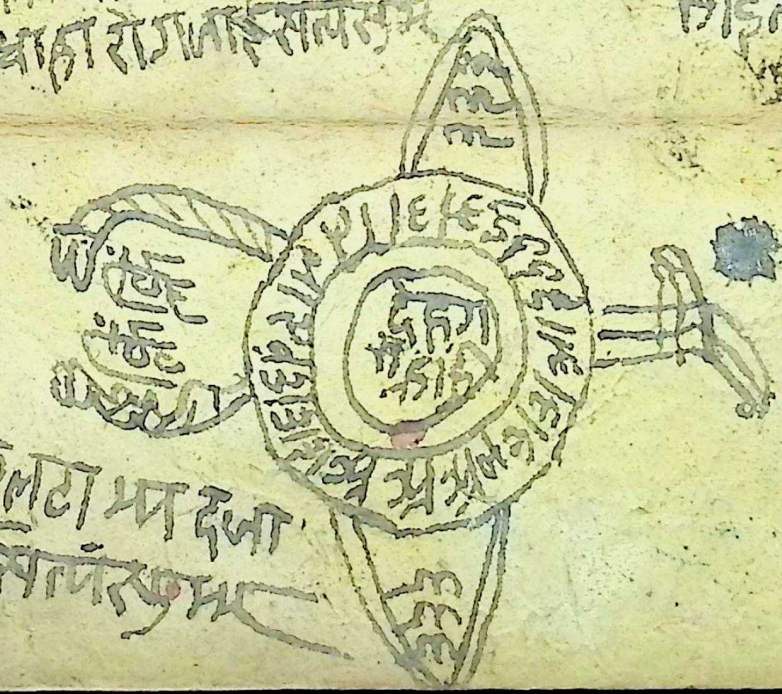

१२ जिव

उलटा पद्म
सिद्धिकरम

१३ ॐ श्रीं ह्रीं सायलवः ॥ प्रथम ही नि यौ उवा को मंत्र
तरं गिसरसं थान वाड़ि को प्रो ब्रु ड़ि ब्रु को हन
लल्ल ब्रु समारुं थल ब्रु ब्रु स्वा रुं ब्रु क्षिनि स्वा रुं
वो कसी बा रुं घ्रेत मा रुं ड़ी ट मा रुं ब्रु ट मा रुं कुल व
रुं ब्रे द व्या रुं कु ट मा रुं क प ट मा रुं मंत्र ई श्वर

१४ वो कसी जा ॥ १ ॥ अर्थ औ सि को वा ध्व जा ड़ सार वा
मंत्रः ॥ ॐ का म रुदे स्व कि का मा क्षपा देवि व रुं ई मारि
ब्रु वो पा लुं ब्रु का ल लुं ब्रु सेना लुं ब्रु गा ई को वा ह्वा ला गौ औ सि
देवो थो स्वा यौ घो रि दे तो कि रुं ई रा ला गौ आ ल क्तो मा
ह्वा ला गौ म ई द्वे तो वा व ता गौ ई श्व ब्रह्म देव का को ध्व जा र वा

लागौं धौं विनि मेरे का हुला री काम रहे सबि का म्याछा
देवि कि वाचा: फुरु मंत्र ॥ ये सब मंत्र लेउ मंत्र फुरावनु
ले जलाऊँ सत्य ॥२॥ ॐ धौ सारनु मंत्र ॥ काला निजवंसी
पालाज कंस का रंगु रूं कि सक्ति मेरि भ्रमली फुरु मंत्र ई
श्वर पार्वति किवुदाई ॥ य सब मंत्रले सबको का का ह

माथि ७ वैर सि रु सारनु ॐ धौ आ ॥३॥ उल्लाभेद मं
त्र ॥ ॐ वज्र थोड वज्र का ई वज्र द सैंधे रवज्र का
ला भेद कि धानी जो कै सोम रैत स्की भली
दि ग्र ठि रै गु रु कि सक्ति मेरि भक्ति फुरु मंत्र ई हु
नि रे स्वाहा ईश्वरी वाचा ॥४॥ उल्लाभे द मंत्र ॥ ॐ नमोसि
द्धि वाजेनी छवनं कंमेवंद्र सुर्य कहै श्वर कंवेजे जानि मि

सती ए समंत्र ले ओ वेरवाल मंत्र मुख बनु वीर
१५ उक्त छे ॥ ८ ॥ अक्षत पिसि शिव सुत पका बनु
सिरल पन गर्व वीरि नला गो द्वारि मुको फलन स
दिनु वीर को वेथा जा ॥ ८ ॥ भूत ग किनि सि नि वका
ना मंत्र ॥ ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फेँ हुँ फेँ हुँ फट् स्वाहा
ईश्वरी वाचा सर्व वि ष सर्व भूते सर्व ग्रे हनां स्वाहा मंत्र

॥ इस मंत्र ले ओ वेर मुख र पत्ते सिर दु वि जाह से
२० रानु भूत डा हि नि भा ॥ १० ॥ नंध मु ख्या की मंत्र ॥
ॐ हस्ति धौ म्रा हि धौ हाल धौ गोड़ा धौ वा रै
धौ का बी मा तो वि ना को भंगा रले यो मंत्र त स्व ना भ्वि ठ
नि तं जि ध्या मा गा डु ली पर रि चर आ वे ॥ ११ ॥ सिंदुर
मंत्र तु मंत्र ॥ लिखि के सिंदुर सुवा सा दि सिंदुर दे वि ज हि
उबाल

ॐ सरि स्व द्विसिंदुर चालै ग्रंवि का ग्रावै पा याय रैहो चिधि ग
२१ रूपा दुका नमो स्तुते॥ इ सम्बले ३।७ वेर सिंदुर मंत्र ना थवा
लाव नुस्व स्त्री ग्रो वै॥१२॥ वो ला याका कुकुरले जाया को मंत्र॥
पुर्व दे शिग्रा ईका त्रिकुकु नि इक दंती द्वी दंति नि दा षुकी से
को कि के वि ष नाशा वि रो ध्वर मा ईश्वर किवा चा॥ इ स
म्बले ७ वेर पा नि मंत्रि षुद्वा व नु वो ला याका कुकुर
को कि षु जा॥१३॥ र गत धाम मा मंत्र॥ ॐ धो चा नु कुर
२२ ओ ने ग्रंस्ना रा का ज सीर गत धा मै गु रु कि सत्ती ग्रेरि
व त्रि पु त्र ईश्वर किवा चा॥७ वेर ग त्रि थ कु रगत
धा ग्र॥१५॥ धो कि को मंत्र॥ ॐ का क व त्रि ना पत्रा लि ग्व
ई उम मा ते शिवं रि कुजो नि ग्व ली ति ते पत्री तीरो ग्व
लो ति नो कि हा रे रक्त षव को शिव्व ते रा वल ग्यलात

वी बैतेइअनीस्टुपनी मर्क अैइले इकुरा वहीम
गरेसा पेहस्लेदहीवो नेलाण्डातम्बाराठलजस्तु
सुनीसवन कोइइअनीस्टुजाँ हासूरासरवुहा
गैसुनायेकुतो हँजसुलकेहे वो कुरामानी
आपणादहिठे की आगो फुक्ती पुवतनापाछ

प्रनेसापहस्लेअनीस्टुसेइकासुरमाफ्रा
बिसरराइजलेइअनीस्टुमकनमवाबिव
चाइइनैसाहीराषीमहोइसोलाइथेसे
सैगनेलागीस्टमने फेरीतेरइकीतोगरा
दीनेकुतते रोषवदीरीसाकोपीनाइस्वावन

या तोजसु वारा गड्डा अनी स्व आगो रूपे
रूपं मुना कोढ साढी गुलाइ पीनास तोज
रोमांत्र भवो दुहाइ दुहाइ दुहाइती नै पेप स्वद
क्लीव जाइ रंग नु दुहै दुहो दु शेलाभनु

गरतीरी हुन्नस क्या तावतुलाइ रमाने
लाइभाल्यां को को सोपाये भैमनपाये
जरै

स्वस्ति श्रीगडेसाधन॥
स्यात्मकृतेरनदिमेकः
या॥ सर्वलियं सर्ववरा॥
सरांप्रजद्वे॥ नमाप्रि
सर्व्वात्मकंकारणंच
मुक्तिप्रदाजंवंदे॥२॥

श्रीमन्मन॥ परंपर
निर्विकल्पधाम्नेनमः
वरस्यनशक्तिविरुद्ध
विरुद्धभगवेकमूर्त्त
नारायेनाथभगवतं

इतिध्यानम्॥ निरंजंपंजरमहादिव्यंसर्वदुष्टनिवारणम्॥
ज्वलतेजोमहावीर्यंसर्वसैन्यनिसूदनम्॥३॥त्रिपुरंदहन
मानस्यहरस्यक्रोधोद्भवोमुखात्॥तदहंप्रवक्ष्यामिआत्म
रक्षाकरंनृणाम्॥४॥पादौरक्षतुनोनित्योघेनैवत्रिविक्र
मः॥जंघेकेसवोरक्षेन्नाभिंवैवजनार्द्दनः॥५॥

नाभिं वैवाक्रतोरक्षेत्कुक्षिं ववामनस्तथा॥ जठरंपद्मनाभश्च
पृष्ठं वैवत्सलाञ्छनः॥८॥वामपार्श्वेतथोविश्वःदक्षिणेतुमधुसूद
सूदनः॥बाहुभ्यांवासुदेवश्चहृदिश्रीवत्सधारकः॥९॥कण्ठंरक्षे
न्नृवाराहःक्षत्रंश्चवृषसराडले॥सात्वतःकरयुग्मेतुहृषि
केसस्तुनाभिकं॥८॥नेत्रेनारायणोरक्षेत्ललाटेगरुडध्व

जः॥कपोलौकेसवोरक्षेद्वैकुंठस्सर्वतोदिशम्॥१०॥श्रा
वणोपिचसर्वेषामंगानिवैनरक्षतु॥पूर्वस्यांपुराड़रि
पुःआग्नेयंश्चाधरस्तथा॥१०॥दक्षिणेनरसिंह
श्चनैऋत्यांवदनोदरः॥पुरुषोत्तमवायव्यांवाय्वंगो
जितवाससः॥११॥गदाधरस्तुकौबेर्यांशंखधृग्नतो

दिसः॥ आकाशेनैव गदा रक्षेत्ता तालेषु रक्षदर्शनः॥१२॥ सर्वदा
सर्वगात्रेषु प्रविष्टो विष्णुपंजरः॥ विष्णुपंजरप्रविष्टो हि वि
रामि पहितले॥१३॥ राजद्वारे पथ्यचोरे संग्रामेसर्वसंका
टे॥ नदिवैतरणीवैव वैरव्याघ्रभयादिषु॥१४॥ सर्व

डाकिनिप्रेतभूतेषु भयंप्रणश्यनजायते॥ रक्षरक्षमहाबल
विलग्नीवजटाधरः॥ जलेरक्षतुवाराहःस्थलेरक्षतुवै
ष्णवः॥ दिवारक्षतुगोविंदोरात्रौरक्षतुवामनः॥१७॥ पंथा
नंतुगंभीरेषोक्षवंसेबलार्दनः॥ रोगविघ्नहरश्चैवबल

ता ग्रहतत्परः ॥१७॥ स्त्री हत्या बालघ्नी तिस्रो विद्युत्ते
पति ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो पठनाद्वत्स संशयः ॥१९॥ अ
पुत्रो त्पद्यते पुत्रं धनार्थिलभते धनम् ॥ विद्यार्थिलभते
विद्यां मोक्षार्थिलभते गतीं ॥२०॥ अपदापरतोनि

धं विघ्नः तोत्राथर्वदा ॥ यइदं पठतस्तोत्रं विघ्नप
जेरमृतपा ॥२१॥ मुच्यतेसर्वपापेभ्यो विघ्नलोकं
सगच्छति ॥ गोसहस्रफलं तस्य वाजपेयसतानिव
॥२२॥ अश्वमेधसहस्राणि फलंप्राप्नोतिमान

वः ॥ कन्या कोटि सहस्राणि विप्र लोकं गच्छति दिवं
जले विष्णु स्थले विष्णुः विष्णु पर्वत मस्तके ॥ ज्वालमाला
कुले विष्णु सर्व विष्णु मयं जगत् ॥ २५ ॥ इति श्री वि
ष्णु जय स्तोत्रं सुभ्य रामरा मर रामरा मरा मरा मरा

मदेऽरावरुणे वर्षादिक्प्रतिमिसिमालेविणाम्बुप्रश्नश्रीगरी
शायनम्बः ॥ स्वर्गद्वारे बलिं कन्या तां हि कन्या वारि स्वर्गे वि
आया सि पदा हिनाथ परमा जिज्ञासा गत्यगाहासि
न स्याती आयो पात पाताहारि सितस्याती आयीका
ठकनाहारि सितं स्याती आयोजलवा ठस्याती आयो
कालिगईका प्रहरलाशिस्याती श्राओगड्डाकी कुपरे

मुकाश्वासनुमंत्र॥ ओंकारनुपरमात्मा भक्तादिकाउ
घंघुघिंकधनिरुद्धदनिसोषनिॐहुं फट्स्वा
हा॥एकमंत्रलेप्रातकालेउठेरपेटमंत्र
मुकाहरस्वप्न॥३२॥वाध्यारोगकोमं

त्र॥नवदिनकाज्वरवापित्तवापुरुगंडसूका
पाकाकुंजरस्वप्नतपवलासिप्रतीनिहुकाछ
त्यागिईश्वरमहादेवकदलासिगौरपार्वती
जोवितप्रजोधरत्नमानकिस्त्रीकाश्रिमा
सिकहोइजा॥३३॥वंतिजरईपरजरईका

छा भरण उपदेशै आगि धं अपानिं अक्षर
आ ईह ई मंत्र ले ७ वे राजु चाले स्त्री नैवाघ्यानि
की हो सत्य ॥३४॥ हरिनाथ को मंत्र ॥ ॐ र
श्री ईलह रि दम्मरि दक्षी मिसै श्री ईलश्रि दम्मरि

स्त्री सैह रिनाह कौं सः चौ वघ्रं गुरु कि स किम्मे
रि श्रक्ति फुः मंत्र ईश्वर कि हुला ई ॥३५॥ वहुला ग्य
को मंत्र अगस्ती के अक्षर सौ वु गज सिंह तुला वृ ॥
पंचैने स्मरने नि मंत्र पाप्ती रोज जिरजाय ती लोह
नां जि रजाय यंत कपत नां जि रजाय ये गुरु कि सहि

सिंगीरिषर्वत उनानुनातिलवे जलेछेडतभई जा
पलाशमैवा पहीडनपुरजलागदुखलेछो
उनश्रलुरि छोडलवैलासगाईथैसिवाक
भेडाहातिघोडाईलादिमनुष्यकानः गुरुकिस
कोभेरिभक्तिकुर्मंचईश्वरकिवावा॥इतानु

लाकोचत्रा॥ॐवाहसर्किउलेखतरिवाधुलुसान
धाहिजाजासायेदुरिसाद्वानगोरिकापुनविनायेक
काकहानभेरिवेनिकाटसम्मलदेवकिलनका
दुखमेराधादुकाटसपार्वतीकिविरिकाट
लेतानुगाकाटसगसोसकोसुटखेगुरुगा

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal colleciton of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai
Date of Birth: 31 December 1960
Place of Birth: Kathmandu, Nepal
Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications
Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology
Master's Degree – Sociology & Anthropology
Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience
Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)
Taught at Secondary Level (Madhyamik)
Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)
Served as Head Teacher
Led academic and administrative development
Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest
Sanskrit Vyakaran
Spiritual & Philosophical Studies
Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust
Funding by MIDF, New Delhi